# तश्करी बातों की

हसीब खान

तश्करी बातों की

Publishing-in-support-of,

**FSP Media Publications**

RZ 94, Sector - 6, Dwarka, New Delhi - 110075
Shubham Vihar, Mangla, Bilaspur, Chhattisgarh - 495001

**Website**: *www.fspmedia.in*

---

**© Copyright, Author**

All rights reserved. No part of this book may be reproduced, stored in a retrieval system, or transmitted, in any form by any means, electronic, mechanical, magnetic, optical, chemical, manual, photocopying, recording or otherwise, without the prior written consent of its writer.

**ISBN:**978-93-6026-910-4

**Price:** ₹ 200.00

The opinions/ contents expressed in this book are solely of the author and do not represent the opinions/ standings/ thoughts of Publisher.

Printed in India

# तश्करी बातों की

हसीब खान

*''मम्मी अब्बा और नाना के नाम ''*

# कुछ खास नहीं

ना तो इतनी हिम्मत है कि, मैं खुद को शायर कहूँ और ना ही औकात कि, इससे बेहतर लिख सकूँ। अब जो भी है यही है। मुझमें लिखने की कोई तहजीब नहीं है। जो दिखा जैसा कागज के बदन पर मल दिया और दिल किया तो स्याही को भी एक शक्ल दे दिया। हाँ, शायद एकजिद थी, जो ये किताब हो पाई। जिद की कुछ बातों को नज्म और नज्म को एक किताब की शक्ल दे दूँ। सच्च बोलूं तो ये किताब नहीं बस एक कोशिश है और ये कोशिश भीकुछ खास नहीं।

बात किताब की करें तो कुछ बेतरतीब नज़्म फैली हुई हैजिनके मायने समेट कर मैंने समझा दिए। कोई नज्म फैल कर थोड़ी दूर चली गई और कोई मेरे करीब शरमा कर रह गई। कुछ ख्यालों में हिचक भी है और कुछ थोड़े बेशरम हैं और अब जो ये ख्याल लफ्जों पे सवार हो कर आजाद हो गए हैं, तो डर भी लगता है कि, इनकी उड़ान कैसी रहेगी। दर्दको जो हर्फ का लिबास मिला है ज़्यादा बड़ा या जरा तंग तो नहीं है। मोहब्बतकी जो समझ है मेरे लफ्जों ने समझी भी है या नहीं है? हाँ, बहुत डर लगता है, पर जब एक बार ये किताब पलट कर देखता हूँ तो कहीं न कहीं एक सुकून बोल पड़ता है, डर है तो पर कुछ खास नहीं।

अब अंत में कुछ खास लोगों को शुक्रिया (क्योंकि ये वो लोग हैं, जो ये किताब खरीदेंगे ) जिनमे मेरी माँ अब्बा और फैमिली वव्हाट्सएप्प ग्रुप के तमाम लोग शामिल हैं। मेरे नाना जिन्होंने मुझे लिखना पढ़ना और यहाँ तक की सोचना भी सिखाया। मेरे प्रोफेसर और टीचर्स जिनकी मर्जी और दया से मैं पास होते–होते यहाँ तक आ पाया। मेरे बहुत सारे दोस्त (नाम लिखते लिखते एक किताब

और भर जाएगी) जो मुझसे अक्सर कहते हैं ''तू इंजीनियरिंग क्यों कर रहा है'' और'आप'जिन्होंने इस किताब को पढ़ने की हिम्मत की। आप सब बहुत कमाल हो और मैं..... मैं कुछ खास नहीं।

**– हसीब खान**

# विषय सुची


| क्र. | विषय सुची | पृष्ठ क्र. |
|---|---|---|
| 1. | एक नजर सैलाब | 1 |
| 2. | खत का अधूरा सा लफ्ज | 4 |
| 3. | सोचता हूँ | 7 |
| 4. | गालिब ना न कहना | 11 |
| 5. | आदमी | 13 |
| 6. | रास्ते | 16 |
| 7. | पासपोर्ट साइज फोटो | 19 |
| 8. | एक कप कॉफी | 23 |
| 9. | ये लफ्ज कुछ और हैं | 25 |
| 10. | लोहे के पर्दे | 29 |
| 11. | डेढ़ फीता आसमान का | 32 |
| 12. | एक घर था | 37 |
| 13. | आँसू | 41 |
| 14. | ऐ अजनबी | 45 |
| 15. | आँखों के किनारे से | 48 |
| 16. | फुटपाथ | 51 |

17. दास्ताँ 53
18. ये ताबूत सी पलके 56
19. रात का इंतजार करना 58
20. रात उड़ाई थी 61
21. ख्वाब 63
22. मेरा जिस्म 66
23. लालटेन 71
24. किताबे पलटता हूँ 74
25. तन्हाई 76
26. आधे आधे 79
27. दोस्त कोई 83
28. सिगरेट 87
29. वे 89
30. रात एक डाकू 92
31. कैनवास 95
32. साहिल के किनारे 98
33. काँच के दिल 101
34. आँचल 104
35. साँसे 108
36. बारूद 111
37. कश्मीर 115

# एक नजर सैलाब

*एक आवाज दबा रखी है पलको में,*
*की फिर कोई पुकार रहा है।*
*कोई शबनमी सुरत है,*
*इन आँखों में उतारते आ रहा है।*
*मैं पलट कर देख भी पाता हूँ।*
*पलट कर कटा ढूंढूँ मैं जवाब*
*वही एक नजर सैलाब।।*

*एक दर्द बेघर फिरता है जिस्म भर,*
*एक नक्श बनाता जा रहा है।*
*कोई हमदर्दी पीछा करती है,*
*दर्द उसे पास बुला रहा है।*
*मैं दर्द ये जी भी नहीं पता हूँ,*
*पर मरता हूँ हर साँस बेहिसाब,*
*वही एक नजर सैलाब।।*

*सुर्ख लाल सुरज सी आँखे हैं,*
*एक जख्म उसमे दौड़ रहा है।*
*कोई लावा आंसू में पिघलता है*
*और दिल मेरा जला रहा है।*
*मैं रो भी तो नहीं पता हूँ*
*बह आते हैं मेरे ख्वाब*
*वही एक नजर सैलाब।।*

*टूटे आइने में अपने ही अक्स को बरबाद देखतां हूँ*
*जिंदगी ने जीने से अब फुर्सत दी है,*
*मैं खुद को कितने जमाने बाद देखता हूँ।*

# खत का अधूरा सा लफ्ज

*वो खत का अधूरा सा लफ्ज*
*वो लफ्ज के अधूरे से मायने,*
*खामोश हैं,*
*किसी किताब में दबे हुए।*

*पन्ने उस किताब के अक्सर*
*उड़ती हुई यादें पलट देती हैं।*
*थोड़ी मोहब्बत पढ़ा देती है,*
*थोड़ी आंसू बहा देती है,*
*उस खत के अधूरे से आसूं,*
*खामोश हैं*

*मेरी आँखों में दबे हुए।*
*खामोश हैं*
*किसी किताब में दबे हुए।*

*उस अधूरे से खत पर,*
*एक मुकम्मल सा नाम है।*
*वो नाम होठों पे है और*
*खामोश हैं,*
*खामोश हैं,*
*किसी किताब में दबे हुए।।*

# तश्करी बातों की

उलझ कर आवाज से,
लड़खड़ाती है लफ्जें।
जुबां पर सहम कर,
छुप जाती हैं लफ्जें।
शर्म की बेड़ियों में,
जकड़ सी गई है।
अकड़ ने लबों पे,
उँगलियाँ जो रखी हैं।
लफ्जों के लिफाफे में,
बात जो पड़ी है।
कहनी है सबसे और
कही भी नहीं है।
उठा कर बातों को,
लफ्जों की जेबों से,
सोचता हूँ मैं,
लगा लूँ नजर से।

लेखक से संपर्क हेतु:
Khan004.haseeb@gmail.com

FSP
FSP MEDIA PUBLICATIONS

BOOK AVAILABLE
Flipkart
GET IT ON Google Play
amazon
amazonkindle

EBOOK AVAILABLE
ISBN 978-93-6026-910-4
9 789360 269104